दैनिक भास्कर
7/7/14

दैनिक भास्कर | टोंक भास्कर

नागफनी व ऊंट कटेली से बनाया पशु आहार

अविकानगर : कांटेदार व अनुपयोगी पौधों पर अनुसंधान का नतीजा, अकाल में भी फायदेमंद

महेश शर्मा | मालपुरा

भीषण गर्मी व सूखे में खूब पनपने वाला कांटेदार नागफनी व ऊंट कटेली अब मवेशियों के लिए अकाल की विभीषिका में संजीवनी का काम करेगा। केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों ने इन कांटेदार व अनुपयोगी माने जाने वाले पौधों पर शोध कर इन्हें अत्यंत उपयोगी घोषित किया है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार अकाल में मवेशियों के लिए चारे व पानी के संकट के दौरान नागफनी व ऊंट कटेला से तैयार किया मिनरल मिक्सर मवेशियों के लिए जीवनदायी साबित होगा। चारा व पानी एक साथ मिलेगा। शोधित मिनरल मिक्सर जानवरों के लिए संपूर्ण पोषण व पानी की पूर्ति करेगा।

संस्थान के निदेशक डॉ. एम.एम. के.नकवी ने भास्कर से बातचीत में बताया कि संस्थान के वैज्ञानिकों ने अन्य विशेष अनुसंधानों के साथ-साथ नागफनी व ऊंट कटेला जैसे अनुपयोगी पौधों को उपयोगी बनाया है। निदेशक नकवी ने बताया कि ऊंट कटेला व नागफनी भीषण गर्मी में भी बिना पानी के पैदा होता है।

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान में तैयार नागफनी के पौधे तथा तैयार की गई मिश्रित चारा बट्टियां।

न्यूट्रिशन की मात्रा ज्यादा होने से उपयोगी

इनमें न्यूट्रिशन की मात्रा ज्यादा होने से इसमें पानी अधिक होता है, लेकिन कांटेदार होने के कारण जानवर इन्हें नहीं खाते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार नागफनी व ऊंट कटेला को पीसकर पेड़ पौधों के सूखे पत्तों व सरसों की तूड़ी या अन्य फसलों के कचरे तथा ज्वार या बाजरे की कुट्टी में मिश्रित कर खिलाया जा सकता है। यह जानवरों का संपूर्ण पोषण है। इस मिश्रण को बकरी, भेड़ व गाय भैंस खूब खाती है। इस मिश्रण को खाने से पशुओं में दूध की मात्रा बढ़ती है और पशुओं के शरीर में 70 प्रतिशत पानी की पूर्ति होती है। नागफनी के पौधों के गुद्देदार होने से इनमें पानी की मात्रा भी अधिक होती है।

विशाल भू-भाग में नागफनी की खेती शुरू

निदेशक के मुताबिक इस अनुसंधान की सफलता के बाद संस्थान परिसर के विशाल भू-भाग में नागफनी की फसल उगा दी गई है। संस्थान के पशु पोषण विभाग के विभागाध्यक्ष प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. ए. साहू ने बताया कि नागफनी व ऊंट कटेला के मिनरल मिक्सर को क्षेत्र के पशुओं की मांग व आवश्यकता के अनुसार बनाया जा सकता है। इससे पशुओं में मिनरल की कमी दूर होती है।

शोधित तकनीक का पेटेंट होगा

संस्थान की ओर से इस मिनरल मिक्सर का पेटेंट कराने के लिए आईसीएआर दिल्ली के माध्यम से आवेदन किया गया है।